Outbreak of Diarrhoea and Cholera in Bihar due to indefinite strike by civic employees

SHRI RAJNI RANJAN SAHU (Bihar): Madam Deputy Chairman, I am thankful to you for giving me the opportunity to raise an important issue relating to a serious situation which has arisen in Bihar.

Madam, diarrhoea and cholera have broken out in epidemic form in the State of Bihar, in almost all the cities and towns of Bihar to our great disappointment, there is an indefinite strike by the civic employees. Almost all the cities and towns of Bihar, under the Municipal Corporations, Municipalities and Notified Area Committees have become a den of dirt and filth due to the strike by civic officials and *safai karmacharis*, which is continuing for over two months, resulting in two to three deaths every day. Recently there has been a dozen of deaths in Bihar Sharif and nine deaths in Bettia. The most alarming situation has cropped up in Deogarh where 10 persons have died recently. It has been reported that there has been altogether more than hundred deaths during the recent past due to diarrhoea and cholera. Situation in Deogarh where thousands of pilgrims are likely to visit from the 1st of August to perform the *Sravani Puja*, is most alarming. Diarrhoea, as I have said, has already claimed ten lives there. So, people are scared and they are also scared because there is an indefinite strike by the civic employees, more epidemic might spread. Madam, the situation has become grim to such an extent that people who would like to perform the *Sravani Puja* in any of the temples in the city would feel suffocated due to the heaps of garbage and filth, aided by rain. Epidemic is spreading in the whole of Bihar. And, to our great disappointment, the Government is not taking even the least care.

Madam, the outbreak of diarrhoea and cholera in Bihar is due to the indefinite strike by the civic employees. From the perusal of newspapers report we feel that in view of the grim situation prevailing in the State of Bihar, if immediate steps are not taken, it will be detrimental for the people of Bihar. More so even for those who believe in worship during Sravan month, their rights of worship will be jeopardised.

I urge upon the Central Government to intervene so that Bihar may be saved from the epidemic which is looming ahead. Further, I urge upon the Ministry of Health to send a team of experts to prevent the epidemic forthwith. At the same time—the hon. Labour Minister is here—he should intervene to bring an amicable settlement to end the strike.

Thanking you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Yashwant Sinha will associate.

SHRI YASHWANT SINHA (Bihar): Madam, I take this opportunity to associate myself with the sentiments expressed by my friend and colleague, Mr. Rajni Ranjan Sahu. The month of Sravan is very close. It is starting on the 1st of August. What happens in Bihar at a place called Vaidyanath dham which is a famous pilgrimage centre is of tremendous national importance because people from all over the country go there in millions. A lakh of people travel, pick up water from a place called Sultanganj, carry it over their shoulders, walking 60, 70 km., 100 km. to this famous temple.

If the situation is what it is today, then I anticipate, I apprehend that there will be tremendous outbreak of all kinds of diseases. I mean, what has happened in Delhi will be put to shame by what is likely to happen in Bihar. Therefore, I suggest, like what my friend, Mr. Sahu did, that the Government of India should take interest in this matter and see that the strike by the sweepers is settled as quickly as possible

[Shri Yashwant Sinha]

and that adequate arrangements are made to ensure the safety of the pilgrims who will travel during the month of Sravan to this pilgrimage centre.

Thank you.

—

Need to extend TV serial "Ramayana" upto "Lov-Kush Kand"

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदया, मैं आपका ध्यान एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सामयिक मांग की ओर आकर्षित कर रहा हूं ।

महोदया, रामायण इस देश की सांस्कृतिक विरासत है । हजारों सालों से समूचा राष्ट्र इससे प्रेरणा लेता रहा है । स्वाधीनता आंदोलन के समय लोकमान्य तिलक, चन्द्रशेखर आजाद, महात्मा गांधी, महर्षि अरविंद ने गीता एवं रामायण की व्याख्या की । उन्होंने राष्ट्र को कर्म और चेतना का संदेश देकर सुशुप्त राष्ट्र की धमनियों में नया खून प्रवाहित किया था ।

पराधीन सपनेहूं सुख नाहीं, कर विचार देखहिं मन माही ।

के मूल मंत्र ने सोये राष्ट्र को झकझोर दिया था । लेकिन जब हम आज के हालात पर नजर डालते हैं तो लगता है कि भगवान श्री राम के युग में भी कुछ ऐसी ही स्थिति थी और देश को तोड़ने वाली ताकतों का बोलबाला था । देश के निर्माण के पथ में विघ्न खड़े किए जा रहे थे, उस समय श्री राम ने सबको संगठित कर पूरे देश को एक रखा एवं देश की संस्कृति को आगे बढ़ाया ।

समाज में जब आस्था का संकट बढ़ रहा हो, निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता का जहर फैलाया जा रहा हो तो ऐसे हालात में मैं दूरदर्शन एवं रामायण सीरियल के कलाकारों को बधाई देता हूं जिन्होंने भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज व्यवस्था के आदर्शों को जन-जन से भलीभांति परिचित करवाया ।

महोदया, सभी लोगों में बेहद लोक प्रिय यह रामायण सीरियल इस बात का प्रतीक है कि आज भी सांस्कृतिक अस्मिता के प्रति हमारी रुझान बड़ी गहरी है । सभी जातियों के लोग इस सीरियल को एकाग्रचित्त होकर आस्थापूर्वक देखते हैं । जन-जन की आस्था के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चरित्र समय, देश और काल की सीमा लाघकर आज भी प्रासंगिक है और आगे भी सदियों तक रहेगा । आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने वाला यह सीरियल अमीर-गरीब, छोटे-बड़े, सबके लिए उपयोगी साबित हुआ है ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया : की परंपरा का बोध कराने वाला रामायण सीरियल बधाई का पात्र है ।

महोदया, अन्याय और अत्याचार से संघर्ष, अनीति पर नीति की एवं अधर्म पर धर्म की विजय के उदाहरणों से हमारी संस्कृति अभिभूत रही है । हमारी भारतीयता, धर्म, इतिहास, संस्कृति से नई ऊर्जा ग्रहण कर समाज की गिरती मान्यताओं की पुनस्थापना आज की महती आवश्यकता है । महोदया, देश के कोने-कोने से रामायण सीरियल को लव-कुश कांड तक दिखाने की मांग उठ रही है । अनेक सामाजिक संगठनों ने भी इसी मांग को दोहराया है । एक प्रबल जनमत रामायण की संपूर्णता देखने के पक्ष में है । नई पीढ़ी को रावण वध तक सीरियल दिखाया जाने से वे उसे महज वार स्टोरी न समझें । अतः आगे का भाग "उत्तरकांड" दिखाया जाना बहुत जरूरी है ।

राम राज्य के आदर्शों एवं राज्य संचालन में राजा के दायित्वों व प्रजा के कर्तव्यों की ओर लव-कुश कांड में अच्छे ढंग से प्रकाश डाला गया है । इसलिए यह भाग अत्यंत सार्थक व उपयोगी होगा, ऐसी मेरी मान्यता है ।

अतः मैं आपके माध्यम से माननीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री जी से आग्रह करता हूं कि रामायण सीरियल को प्रबल जन आकांक्षाओं के अनुरूप लव-कुल कांड तक दिखाने की व्यवस्था करें ।